श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

माण्डला

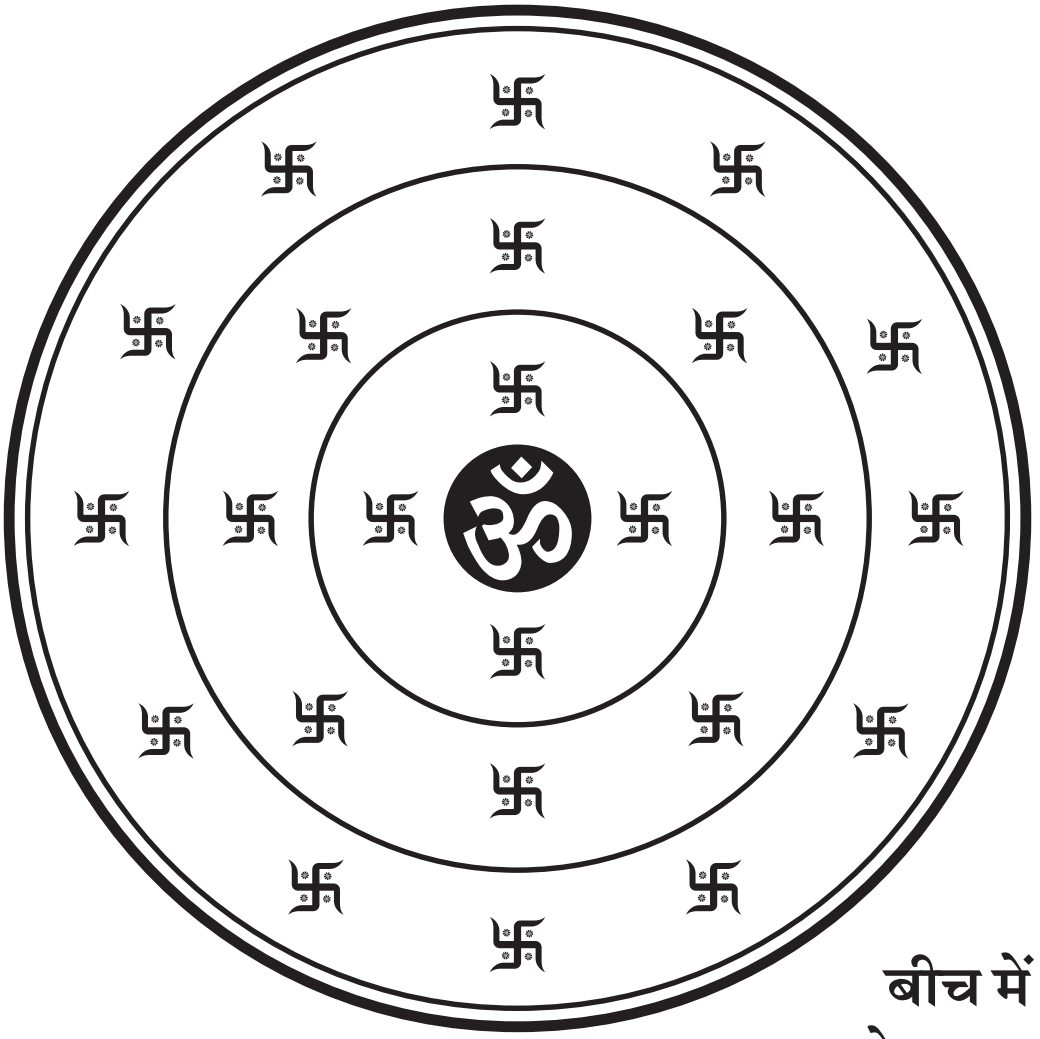

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 4 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 12 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति	:	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम 2022, प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी – मो.: 9829076085 ब्र. आस्था दीदी – मो.: 9660996425 ब्र. सपना दीदी – मो.: 9829127533
संयोजन	:	ब्र. आरती दीदी – मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर–3 रोहिणी, मो.: 9810570747 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879 4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली मो.: 09818115971, 09136248971

पुण्यार्जक :

रंजन – रानी जैन, अदिति जैन, भाग्यश्री – यश जैन,

वामा, मीरापुर (मुजफ्फर नगर)

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन

दोहा – भूमण्डल के ज्योति प्रभू, तीन लोक के नाथ।
वन्दन कर जिनराज के, चरण झुकाएँ माथ।।

ज्ञानोदय

हे नाथ ! आपने जग बन्धन, तजकर के व्रत को धार लिया।
जो पथ पाया था सिद्धों ने, उसको तुमने स्वीकार किया।।
यह तीन लोक में पावन पथ, इसके हम राही बन जावें।
हम शीश झुकाते चरणों में, प्रभु सिद्धों की पदवी पावें।।1।।
शुभ तीर्थंकर सम पुण्य पदक, यह पूर्व पुण्य से पाये हैं।
सब कर्म घातिया नाश किए, अरु केवल ज्ञान जगाये हैं।।
शुभ ज्ञान की महिमा अनुपम है, यह द्रव्य चराचर ज्ञाता हैं।
इस ज्ञान को पाने वाला तो, निश्चय मुक्ती को पाता है।।2।।
जिनको यह ज्ञान प्रकट होता, वह अर्हत् पद के धारी हों।
वह सर्व लोक में पूज्य रहे, अरु स्व पर के उपकारी हों।।
वे दिव्य देशना के द्वारा, जग जीवों का कल्याण करें।
करते सद् ज्ञान प्रकाश अहा, भवि जीवों का अज्ञान हरें।।3।।
यह प्रभु का पद ऐसा पद है, जग में कोई और समान नहीं।
हम तीन लोक में खोज लिए, पर पाया नहीं है और कहीं।।
उस पद का मन में भाव जगा, जिसको तुमने प्रभु पाया है।
यह भक्त जगत की माया तज, प्रभु आप शरण में आया है।।4।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री मुनिसुव्रत नाथ पूजा विधान (लघु)

स्थापना

सुव्रत के धारी मुनिसुव्रत, मोक्ष मार्ग पर किए प्रयाण।
जिनकी अर्चा करके होवे, भवि जीवों का भी कल्याण।।
भव्य जीव सौभाग्य जगाएँ, करके प्रभु का आराधन।
विशद हृदय में आज यहाँ पर, करते हैं हम आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(विष्णुपद छन्द)

हम रहते हैं तैय्यार, क्रोधित होने को।
यह जल लाए हे नाथ !, आतम धोने को।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की भारी मार, भव-भव में खाई।
निज गुण पाने की याद, हमको अब आई।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे अक्षय निधि भण्डार !, अक्षय पद धारी।
दो अक्षय पद दातार, हमको त्रिपुरारी !।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन में खिलते फूल, मुरझा जाते हैं।
हो काम रोग निर्मूल, महिमा गाते हैं।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बनाकर आज, पूज रहे स्वामी।
अब क्षुधा रोग हो नाश, हे अन्तर्यामी !।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में कहलाए दीप, मोह तिमिर नाशी।
हम भी बन जाएँ नाथ !, शिवपुर के वासी।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चढ़ा रहे हैं धूप, कर्मों का क्षय हो।
अब हमकोभी संप्राप्त, पद प्रभु अक्षय हो।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तन-मन-करने संतुष्ट, फल कई खाते हैं।
फल सरस लिये यह आज, यहाँ चढ़ाते हैं।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पाकर के पद निर्वाण, शिवपुर जाते हैं।
पाने शिव पद भगवान, अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - नीर भराया कूप से, देते हैं जल धार।
भक्ति भाव से पूजते, पाने शिव का द्वार।।

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, भक्ति भाव के साथ।
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, हे त्रिभुवन के नाथ ! ।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

सावन वदि द्वितिया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभू जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि बारस शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
निर्जर कूट से शिवपद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – महिमा जिनकी है अगम, गुण का है ना पार।
मुनिसुव्रत जिनराज की, जयमाला शिवकार।।

(शम्भू छन्द)

मुनिसुव्रत व्रत के धारी हो, मोक्ष मार्ग पर गमन किए।
रत्नत्रय का पालन करके, निज आतम का मनन किए।।
द्वादश तप के द्वारा स्वामी, अपने कर्म विनाश किए।
कर्म घातिया नाशन हारे, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।1।।
तीन लोक की पुण्य प्रकृतियाँ, जिनने अतिशय पाई हैं।
इस जग की सारी बाधायें, क्षण में आप नशाई हैं।।
अतिशय गुण इस जग के सारे, पाकर दोष विनाश किए।
रहकर के संसार में प्रभु जी, सुखानन्त में वास किए।।2।।
जिनके चरण कमल की अर्चा, सारे विघ्न विनाश करे।
भूत प्रेत व्यन्तर की बाधा, रोग शोक का नाश करे।।
हृदय रोग ज्वर कुष्ट की बाधा, रक्त चाप हो पक्षाघात।
अन्य कोई तन मन की पीड़ा, से मुक्ती होवे पश्चात।।3।।
पिता पुत्र भाई परिजन भी, करें शत्रुता का व्यवहार।
करें परिश्रम पूरा लेकिन, चले नहीं उसका व्यापार।।
मन अशान्त रहता हो भारी, मन में पाये शांति न लेश।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, जीवन में हो शांति विशेष।।4।।

भव्य जीव जिन अर्चा करके, पा लेते हैं पुण्य निधान।
जिससे सुख शांती को पाते, प्राप्त करें जग में सम्मान।।
तीन लोक में पुण्य प्रदायक, जिन अर्चा है अपरम्पार।
भव्य जीव भक्ती कर पाते, कर्म नाशकर मुक्ती द्वार।।5।।

दोहा - सुव्रत पाएँ जीव जो, मुनिसुव्रत के द्वार।
उनका होवे शीघ्र ही, इस भव से उद्धार।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - तीन लोक में पूज्य हैं, मुनिसुव्रत भगवान।
सुख शांती पाएँ विशद, करते हम गुणगान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रथम वलय:

दोहा - कर्म घातिया नाशकर, पाए केवलज्ञान।
पुष्पांजलि करते चरण, हे सुव्रत भगवान ! ।।

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

(नरेन्द्र छन्द)

ज्ञानावरणी कर्म के द्वारा, ढका ज्ञान मेरा।
जीवन में अज्ञान दशा ने, डाला है डेरा।।

कर्म विनाशक मुनिसुव्रत के, गुण अनन्त गाएँ।
गुणानन्त धारी जिनवर के, गुण गा हर्षाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहित अनन्त ज्ञान सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म दर्शानावरणी से मम, दर्शन गुण खोता।
दर्शन करना चाह रहे पर, ना दर्शन होता।।
कर्म विनाशक मुनिसुव्रत के, गुण अनन्त गाएँ।
गुणानन्त धारी जिनवर के, गुण गा हर्षाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म रहित अनन्त दर्शन सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोहनीय मोहित कर जग में, हमे भ्रमाता है।
ज्ञान स्वभावी मम स्वरूप है, उसे भुलाता है।।
कर्म विनाशक मुनिसुव्रत के, गुण अनन्त गाएँ।
गुणानन्त धारी जिनवर के, गुण गा हर्षाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित अनन्त सुख सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्मान्तराय के कारण कोई, लाभ नहीं पाते।
मनोकामना पूर्ण होय ना, पल-पल पछताते।।
कर्म विनाशक मुनिसुव्रत के, गुण अनन्त गाएँ।
गुणानन्त धारी जिनवर के, गुण गा हर्षाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहित अनन्त वीर्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – कर्म घातिया नाश कर, बने आप अर्हन्त।
गुण गाते हम भाव से, हो कर्मों का अन्त।।

ॐ ह्रीं घातियाँ कर्म रहित अनन्त चतुष्टय युक्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितिय वलयः

दोहा – प्रातिहार्य से युक्त हैं, तीर्थंकर भगवान।
पुष्पांजलि कर पूजते, करते हम गुणगान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(त्रोटक छन्द)

तरुवर अशोक शुभकारी है, जो सारे शोक निवारी है।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।1।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन रत्न जड़ित जानो, जिस पे आसन जिन का मानो।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।2।।

ॐ ह्रीं दिव्य सिंहासन प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय क्षत्र आपके शीश रहे, त्रिभुवन के स्वामी आप कहे।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।3।।

ॐ ह्रीं त्रय छत्र प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

भामण्डल आभा दर्शाए, जो सप्त भवों को दिखलाए।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।4।।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो दिव्य ध्वनि ॐकार मयी, जो गाई पावन कर्म क्षयी।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।5।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दिव्य दुन्दुभि वाद्य बजें, जहाँ अतिशयकारी साज सजें।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।6।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभि प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर चँवर ढौरते हैं भाई, प्रभु की दर्शाते प्रभुताई।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।7।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठी चंवर प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर पुष्प वृष्टि कर हर्षाएँ, जिनवर की महिमा दर्शाएँ।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु प्रातिहार्य शुभकारी हैं, जिनकी महिमा अतिभारी है।
जो प्रातिहार्य कहलाते हैं, जिन की महिमा दर्शाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा – द्वादश तप को धारकर, करें निर्जरा घोर।
अष्ट कर्म को नाश कर, बढ़ें मोक्ष की ओर।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

बारह तप के अर्घ्य

(सखी छन्द)

आहार तजें जो प्राणी, वे अनशन तप धर ज्ञानी।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कम इच्छा से जो खावें, ऋषि ऊनोदरी कहावें।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वस्तू के संख्याकारी, हों व्रत संख्यान के धारी।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादिक रस परिहारी, हों रस परित्याग के धारी।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शैय्या विविक्त जो पावें, इस तप के धारि कहावें।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्यासन तप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो काय सुक्लेश उठाएँ, वे काय क्लेश धर गाएँ।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप प्रायश्चित्त जो धारें, सब अपने दोष निवारें।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चिततप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है विनय सुतप शुभकारी, धारण करते अनगारी।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं विनय तप धारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हों साधू सेवाकारी, वैय्यावृत्ती तप धारी।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वाध्याय सुतप ऋषि धारें, अपना अज्ञान निवारें।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो तन से ममत्व निवारें, व्युत्सर्ग सुतप ऋषि धारें।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन का जो रोध कराएँ, वे ध्यान सुतप को पाएँ।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप बाह्याभ्यन्तर गाए, छह-छह शुभ भेद बताए।
वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप धारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा - सुव्रत के धारी हुए, मुनिसुव्रत भगवान।
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव सोपान।।

चौपाई

मुनिसुव्रत जी व्रत के धारी, भवि जीवों के करुणाकारी।
जन-जन के हैं भाग्य विधता, जो हैं परम शांति के दाता।।1।।

स्वर्गों के सुख जिन्हें ना भाए, राजगृही को धन्य बनाए।
माँ पद्मा के गर्भ में आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए।।2।।
अन्तिम जन्म प्रभू जी पाए, मेरू पे सुर न्हवन कराए।
सुर-नर किन्नर महिमा गाते, नृत्य गान कर हर्ष मनाते।।3।।
कछुआ लक्षण पग में पाए, नील सुमणि सम सुन्दर गाए।
पद युवराज आपने पाया, निष्पृह होके राज्य चलाया।।4।।
जाति स्मरण आपको आया, मन में तब वैराग्य समाया।
नमः सिद्धेभ्या बोल के भाई, मुनिवर की शुभ दीक्षा पाई।।5।।
तेरह विधि चारित के धारी, परिग्रह त्याग हुए अविकारी।
निज आतम का ध्यान लगाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।6।।
दिव्य देशना आप सुनाए, जीव कई तब बोध जगाए।
समवशरण हो अतिशयकारी, हो सुभिक्षता मंगलकारी।।7।।
रहें कोई भी ना बाधाएँ, प्राणी अतिशय शांती पाएँ।
दीन दरिद्री रहे ना कोई, बीमारी ना तन में होई।।8।।
रोग शोक ना कोई आबें, तन मन की बाधाएँ जावें।
रहे कोई भी ना अज्ञानी, सुने जीव जो भी जिनवाणी।।9।।
मित्र सभी हो जग के प्राणी, महिमा प्रभु की जग कल्याणी।
भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।10।।

दोहा - मुनिसुव्रत जिनराज का, किया यहाँ गुणगान।
यही भावना है 'विशद', पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - भाव सहित जो भी करें, मुनिसुव्रत गुणगान।
अल्प समय में हो 'विशद', उसका भी कल्याण।।

।। इत्यादि अशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

मुनिसुव्रत छियालीसा

दोहा - अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

चौपाई

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।।1।।
प्रभू हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।2।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीश झुकाते।।3।।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।4।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।।5।।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।6।।
प्रभू तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।।7।।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।8।।
प्रभू की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमी नासा पर।।9।।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।10।।

मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।।11।।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।12।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।।13।।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।14।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन सुदि पाए।।15।।
वहाँ पे सुर बालाएँ आई, माँ की सेवा करें सुभाई।।16।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।।17।।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।18।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तब मन हर्षाया।।19।।
पग में कछुआ चिन्ह दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।20।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।।21।।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।22।।
बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।।23।।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।24।।
उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।।25।।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभू के मन वैराग्य जगाए।।26।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभू जी को पधराए।।27।।
भूपति कई प्रभू को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।28।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।।29।।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभू ने सार्थक नाम बनाया।।30।।

पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।।31।।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।32।।
बेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।।33।।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।34।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभू ने केवलज्ञान जगाया।।35।।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।36।।
गणधर प्रभू अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।।37।।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।38।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आई।।39।।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।40।।
प्रभू सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।।41।।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।42।।
फाल्गुन वदी बारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।।43।।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ती पाये।।44।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।।45।।
विशद भावना हम ये भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।46।।

दोहा –पाठ करें छियालीस दिन, नित छियालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

मुनिसुव्रत जिनराज की आरती

(तर्ज:- इह विधि मंगल आरती कीजे...)

मुनिसुव्रत की आरति कीजे,
अपना जन्म सफल कर लीजे।।टेक।।

नृप सुमित्र के राजदुलारे, माँ श्यामा की आँख के तारे।
मुनिसुव्रत...।।1।।

राजगृही के नृप कहलाए, कछुआ लक्षण पग में पाए।
मुनिसुव्रत...।।2।।

तीस हजार वर्ष की भाई, श्री जिनवर ने आयु पाई।
मुनिसुव्रत...।।3।।

श्रावण वदी दोज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।
मुनिसुव्रत...।।4।।

दशें वदी वैशाख को स्वामी, जन्म लिए त्रिभुवनपति नामी।
मुनिसुव्रत...।।5।।

वैशाख वदी दसमी दिन आया, जिन प्रभु ने संयम को पाया।
मुनिसुव्रत...।।6।।

वैशाख वदी नौमी दिन गाया, प्रभु ने केवलज्ञान उपाया।
मुनिसुव्रत...।।7।।

फाल्गुन वदी बारस को भाई, कर्म नाशकर मुक्ती पाई।
मुनिसुव्रत...।।8।।

गिरि सम्मेद शिखर शुभ गाया, 'विशद' मोक्षपद प्रभु ने पाया।
मुनिसुव्रत...।।9।।

आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज पूजन

स्थापना

दोहा- विशद गुणों के कोष हैं, विशद सिन्धु है नाम।
विशद करें आह्वान हम, करके चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पूजा-अष्टक)

हम हैं मन वच तन के रोगी, गुरुवर स्वस्थ आत्म के भोगी।
गुरूवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष गुरु मोह नशाए, दुख संसार के हमने पाए।
गुरूवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक परिणति में आए, शुद्धातम को हम विसराए।
गुरूवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

रहा काम का फूल विषैला, करते हम आतम को मैला।
गुरूवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन की नित चाह बढ़ाए, क्षुधा रोग से ना बच पाए।
गुरूवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आँख मीचते होय अंधेरा, जब जागे तव होय सबेरा।
गुरूवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूल धूप की हमे सताए, कर्म पूर्ण मेरे क्षय जाये।
गुरूवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की आशा सदा बढ़ाई, लेकिन पूर्ण नहीं हो पाई।
गुरूवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद अर्घ्य हम यहाँ चढ़ाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
गुरूवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नीर भराया कूप से, देते शांतीधार।
अष्टकर्म को नाश कर, मैट सकें संसार।।

।। शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा- पुष्पांजलि को हम यहाँ, लाये सुरभित फूल।
मुक्ती पाने के लिए, साधन हों अनुकूल।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा-लघुनन्दन तीर्थेश के, जिनवाणी के लाल।
विशद सिन्धु गुरुदेव की, गाते हैं जयमाल॥

(छन्द-तामरस)

जय जय जय गुरुदेव नमस्ते, पूजें चरण सदैव नमस्ते।
विराग सिन्धु के शिष्य नमस्ते, उज्जवल भाग्य भविष्य नमस्ते॥
अर्हत् सम स्वरूप नमस्ते, विशद सिन्धु जग भूप नमस्ते।
अतिशय महिमा वान नमस्ते, करते जग कल्याण नमस्ते॥
शब्दों में लालित्य नमस्ते, हितकारी साहित्य नमस्ते।
वाणी जगत हिताय नमस्ते, दर्शन दर्श प्रदाय नमस्ते॥

सोरठा-पत्थर में भगवान, दिखते भक्ती भाव से।
करते हम गुणगान, गुरुवर जो साक्षात् हैं॥

सारा जग यह जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाता है।
भाव सहित जिनकी अर्चा कर, अतिशय महिमा गाता है॥
इतनी शक्ति कहाँ हम गुरु को, हृदय में शुभ आह्वान करें।
अल्प बुद्धि से उनके चरणों, का हम भी गुणगान करें॥
है श्मशान सरीखा हे गुरु!, मन मंदिर का देवालय।
आन पधारो हृदय हमारे, तो बन जाये सिद्धालय॥

दोहा- हम दोषों के कोष हैं, हुए विशद मदहोश।
दर्शन करके आपका, मन में जागा होश॥

विशद सिन्धु,हे विशद सिन्धु!, हम करते हैं चरणों वंदन।
भक्ति सुमन करते हैं अर्पित, भाव सहित करते अर्चन॥
जिनकी चर्चा अर्चा करके, खो जाए मन का क्रन्दन।
ऐसे गुरु के चरण कमल कों, करते हैं हम अभिनन्दन॥
करुणामूर्ती परम विरागी, यह जग करता अभिनन्दन।
शिव पद के राही तव चरणों, मेरा बारम्बार नमन॥

दोहा- ज्ञानामृत में भाव से, श्रद्धा का रस घोल।
तीनों योग सम्हाल के, गुरु की जय जय बोल॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय! जयमाला
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- महिमा जिन की हैं अगम, पायें कैसे पार।
करें आरती भाव से, वंदन बारंबार॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

(संघस्थ) -ब्र. आरती दीदी